2022-23

(3)

Impact Factor : 7.109

ISSN 2349-364X

वेदाञ्जलि Vedanjali

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-१० अंक-१९, भाग-१ जनवरी-जून, २०२३

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

- एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति
  डॉ0 सुखबीर सिंह 229–231
- उपनिषदों के आधार पर गोपाल दास नीरज की कविताओं की समीक्षा
  ब्रजेश उपाध्याय 232–237
- श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में राजनीतिज्ञों का नैतिक पतन
  अम्बिका तिवारी 238–240
- माध्यमिकस्तरीय छात्राणां संस्कृत–हिन्दीभाषामाध्यमयोः प्रयोगः
  पूनम व डॉ0 सरोज सेवदा 241–243
- मानवाधिकार और जैन धर्म
  डॉ0 उर्मिला मीना 244–248
- डॉ0 राजेन्द्र यादव का कथा साहित्य "एक अध्ययन"
  डॉ0 रविशंकर मंडल 249–252
- प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन और बौद्ध साहित्य
  प्रो0 आराधना व दीपक शर्मा 253–256
- दर्शनान्तरेषु ईश्वरस्वरुपविमर्शः
  Sukanti Barik 257–258
- जीव–जंतु एवं पौधे भी प्रेरित होते हैं संगीत से
  डॉ0 इंदिरा गोस्वामी 259–262
- नागार्जुन के उपन्यासों में नारी विमर्श
  डॉ0 हिमांशु शेखर सिंह व रानी यादव 263–265
- प्रमुख गृह्यसूत्रों में निर्दिष्ट उपनयन संस्कार की समीक्षा
  डॉ0 रजनीश 266–271
- संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में वकोक्ति
  कुमारी स्नेहा आर्या 272–277
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिभावको के सहयोग प्राप्तांक तथा उनकी अध्ययन आदत प्राप्तांको के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना
  डॉ0 शिखा चतुर्वेदी व ब्रिजेश कुमार 278–280
- मानमेयोदये आत्मस्वरूपम्
  नवकुमारपण्डा 281–282
- जलवायु परिवर्तन : विकसित और विकासशील देशों का प्रयास एवं प्रभाव 283–288

डॉ0 विजय शंकर विक्रम

- **भारत की पर्यावरणीय नीति : एक विश्लेषण** 289–292

  डॉ0 वीणा कुमारी

- **दर्शन के क्षेत्र में अभिनवगुप्त का योगदान** 293–296

  Dr. Surinder Kumar

- **MENTAL STRESS OF FEMALES IN RELATION TO SOME BACKGROUND VARIABLES** 297–300

  Priya Kumari & Dr. Ram Dhyan Rai

- **STUDY ON "STATISTICAL ANALYSIS OF CUSTOMER PERSPECTIVE FLUCTUATION IN THE BANKING INDUSTRY OF INDIA"** 301–303

  Reena jangir & Dr. Rajesh Kumawat

- **The Myth of the Gentleman in George Orwell's Burmese Days** 304–308

  Vikram Singh Nirwan

❖

2022-23

वेदांजलि, An International Peer Reviewed Refereed Research Journal
वर्ष–10, अंक–19, भाग–1, जनवरी–जून 2023 । ISSN: 2349-364X । Impact Factor : 7.109

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति

• डॉ० सुखबीर सिंह

मानव मात्र की जिज्ञासा वृत्ति सृष्टि के आदिकाल से ही पारमार्थिक सत्ता के अन्वेषण की रही है। इसी कारण से मानव ने उस परम सत्ता को बहुविध रूपों में अन्वेषित किया है। ईश्वर एक है अथवा अनेकअथवा ?अमूर्त है ?वह देवता रूप है ? यह प्रश्न सदा ही मानवमात्र की नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा को आंदोलित करते रहते हैं। पौरस्त्य तथा ?अनिर्वचनीय है पाश्चात्य विद्वानों ने अपने अपने मतानुसार इस विषय पर समाधान प्रस्तुत किए हैं। किंतु बिना वेद तत्वों को विचारे अथवा वैदिक मंत्रों या मत को आत्मसात् किए संपूर्ण अन्वेषण अधूरा जान पड़ता है। अतः अन्यान्य विषयों की (ईश्वरतत्वविषयक) मूलोत्पत्ति के अन्वेषणार्थ जैसे वेदों की शरण लेनी पड़ती है ठीक उसी प्रकार परम तत्वईश्वरीय सत्ता की चर्चा भी बिना वेदों अथवा षडङ्गों के अधूरी है। आइये विचार करते हैं-:

यह सुस्पष्ट तथा सर्वमान्य तथ्य है की इस संसार की प्राचीनतम लिखित सामग्री ऋग्वेद के रूप में समुपलब्ध होती है तथा ऋग्वैदिक सूक्तों में देवता विधान दृष्टिगोचर होता है। वस्तुतस्तु ऋग्वेद के प्रत्येक सूक्त का एक अपना देवता है तथा उस सूक्त की ऋचाओं में तत्सम्बद्ध देवता की स्तुति की गई है आचार्य यास्क देवता शब्द का निर्वचन करते हुये कहते हैं कि---: देवो दानाद्दीपनाद् वा । ,द्योतनाद् ,[1]

पदार्थों को प्रदान करने वालेप्रकाशित होने वाले अथवा संपूर्ण चराचर जगत को प्रकाशित करने वाले को देवता कहा जाता , है। जैसा कि मैक्स है। ऋग्वेद में देवताओं की कुल संख्या ३३मूलर ने अपनी पुस्तक [2]में पृष्ठ संख्या १५ से ३८ तक लिखा है। -:

(क)स्वर्ग के देवता-: द्यौःसूर ,मित्र ,वरुण ,्य अश्विनयुग्ल। ,उषस् ,आदित्यगण , विवस्वत् ,विष्णु ,पूषन् ,सवितृ,
(ख)अंतरिक्ष के देवता-: इंद्रआपः। ,मरुद्गण पर्जन्य,रुद्र ,अज एकपाद ,मातरिश्वन् अहिर्बुधन्य ,अपां नपात्, त्रित आप्त्य ,
-:पृथ्वी के देवता (ग) नदियाँ सोम। ,अग्नि ,पृथिवी ,
(घ)भावात्मक देवता -:सवितृदिति । ,अदिति ,श्रद्धा ,मन्यु ,प्रजापति ,विश्वकर्मा ,धर्तृ ,त्वष्टृ ,धातृ ,
(ङ)देवियां -:उषस्सूर्या देवपत्नियाँ। ,अग्नायी ,वरुणानी ,इंद्राणी ,पृश्नि ,राका ,सरस्वती, इला ,धिष्णा ,पुरंधिः ,वाक् ,
(च)युग्म देवता -:मित्रावरुणाद, इंद्रावरुणा ,्यावापृथ्वी ,इंद्रापूषणा ,इंद्राविष्णु ,इंद्राबृहस्पति ,इन्द्राग्नी, इंद्रवायु , अग्नीषोमा । ,सोमारुद्रा
(छ)देवताओं के समूह-: मरूद्गण ,(या १८० २१)रूद्रगण ।:विश्वेदेवा (या ८ ७) आदित्यगण (संख्या अनिश्चित)
(ज)छोटे देवता-: ऋभुगण (झ)गंधर्वगण। ,अप्सरागण ,
)झ (रक्षा करने वाले देवता-: वास्तोष्पतिउर्वरापति। ,क्षेत्रस्यपति ,
किंतु आचार्य यास्क ने देवताओं को तीन प्रकार का बताया है-: [3]
(क)पृथिवी स्थानीय।
(ख)अंतरिक्ष स्थानीय।
(ग)द्युस्थानीय।

आचार्य यास्क् का उपर्युक्त विभाजन ऋग्वेद पर आधारित है -:

ये देवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्यामध्येकादशस्थ ।
अपसुश्चितोमहिनैकादशस्थ ते देवा यज्ञमिमं जुषध्वम्।।[4]

इसी क्रम में अनेक विद्वानों ने विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों को देवता कहा है। कुछ आलोचकों ने ३३ अग्नि आदि देवताओं को परमेश्वर के अर्थ में व्याख्यायित किया है तथा उसमें विभिन्न शक्तियों की कल्पना की है। बृहद्देवता और निरुक्तकार ने सिद्धांत रूप में एक ही महादेवता परमात्मा को माना है। किंतु ऋग्वेद में कहींकहीं त्रैत-वाद के भी दर्शन होते हैं-:

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ।।[5]

• सहायक आचार्य (संस्कृत) राजीव गांधी राजकीय महाविद्यालय, साहा(हरियाणा) अंबाला ,

निरुक्तकार यास्क ने बहुदेववाद तथा एकदेववाद का चिंतन समुचित रुप में किया है। उनके मत में देवताओं की एक ही आत्मा है तथा अन्यान्य देवता इसी आत्मा के अंग ।वे अंगांगीभावन्याय का मानो बीजवपन करते हुये कहते हैं कि संभवतः पृथक पृथक कर्मों के अधिष्ठाता होने के कारण बहुदेवतावाद स्वीकरणीय है-:

महाभाग्यात् देवतायाः एकः आत्मा बहुधा स्तूयते।[6]

कुछ आचार्य यास्क के उपर्युक्त मत को आलंबन बनाकर इस शक्ति विभाजन अथवा कर्म विभाजन की तुलना यूनान देश के , प्राचीन प्रकृतिवाद से करते हैं।किंतु यह सर्वथा असंगत है क्योंकि ऋग्वैदिक मंत्रों में स्पष्ट निर्देश है-:

इन्द्रं मित्रं वरुणाग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।[7]

अतः यह कहना भ्रामक होगा कि यदि एक ही सत्व की विविध्र रूपों में स्तुति बहुदेवतावाद है। ईश्वर का एकत्वरुपी विचार जो आगे चलकर उपनिषदों तथा शंकराचार्य जी के अद्वैत वेदांत में पुष्पित एवं फलित हुआ निश्चितरूप से ऋग्वैदिक अंतिम सूक्तों में ही निर्देशित हो चुका था ।ऋग्वेद में तो हमें सर्वेश्वरवाद के भी उदाहरण मिलते हैं -:

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवाः अदिति पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।[8]

हिरण्यगर्भसूक्त में तो स्पष्टतया ईश्वर को विश्वमय दिखाया गया है-:

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। !
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।[9]

वस्तुतस्तु चाहे वह बहुदेवतावाद से प्रारंभ हुयी हो किंतु ऋग्वैदिक ऋचाओं की ज्ञानसारणी मोक्षदायिनी ज्ञानगंगा देवताओं का सामूहिक वर्णन करने के उपरांत एकत्व की ओर बह चली है। इस प्रकार के चिंतन को मैकडॉनल महोदय बहुदेवतात्मक एकदेवतावाद कहते हैं------: Polytheistic monotheism--henotheism, kathenotheism:-

The belief in individual Gods alternately regarded as the highest. Henotheism is an appearance not reality.[10]

अब प्रश्न उठता है तथा हमारे मानस पटल को आंदोलित करता है कि यदि सभी देवता उस परम सत्ता की भिन्नभिन्न रूपा - कुछ आचार्यों को देवताओं का मूर्तरुप ?अथवा साक्षात्शरीरधारी पुरुष आकृतिविशेष ?शक्तियां है तो क्या ये देवता अमूर्त हैं करने हेतु मनुष्य के समान ही अभिप्रेत है। वे अपने मत को पुष्ट तर्क देते हैं कि देवताओं के संबोधन चेतन जीवों के समान है मनुष्य के कर्म भी इन देवताओं में ,मानवों की वस्तुओं का ही ये बहुधा प्रयोग करते हैं ,मनुष्य के समान ही इनके अंग है, दृष्टिगोचर होते हैं। किंतु आचार्य यास्क कहते हैं कि यह सभी विशेषताएं देवताओं को मनुष्य सदृश सिद्ध नहीं करती क्योंकि देवताओं में अचेतनवस्तुवद्व्यवहार भी परिलक्षित होता है। लेकिन वे बाद में स्वतः भी कहते हैं कि -:

अपि वा उभयविधाः स्युः ।[11]

मैकडॉनल महोदय का मत तो देवताओं को अति मानव के रुप म (सुपरमैन)ेें स्वीकृति प्रदान करता है -: The true Gods of the veda are glorified human beings, inspired with human motives and passions, born like men, but immortal.[12]

वस्तुतस्तु देवताओं के स्वरूप चिंतन में निरुक्त दिशा ही श्रेयस्कर प्रतीत होती है आचार्यों ने कहा भी है-: **चेतनाचेतन विकरणधर्मि त्वादात्मानं विकुर्वतोऽस्य अन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति । अग्नीन्द्रसूर्याणां परस्पराक्षेपमनन्यत्वम्।एकेन महता देवतात्मना सह च अनन्यत्वमृघटपटादीनां मृदा । नाङ्गिनमङ्गानि अतिरिच्यन्ते भेदेनाग्रहणात् न चाङ्गान्यनपेक्ष्य --यथा, प्रत्यङ्गानि भवन्ति। तस्मादग०्नीन्द्रसूर्यात्मकस्य देवतात्मोऽङ्गानि जातवेदोवायुप्रभृतीनि शुकन्यश्वादयश्च प्रत्यङ्गानि ।तदेष महानात्मा अङ्गप्रत्यङ्गभावेन व्यूहमनुभवन् एकोऽपि सन् बहुधा स्तूयत इति सर्वमवदातम्।**[13]

उपर्युक्त सभी प्रमाणों का परिशीलन करने के उपरांत मैं कहना चाहता हूं कि-----: **ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च ।**[14]

ईश्वर के साधक अन्वेषक का यह धर्म है कि वह बिना किसी प्रयोजन के षडङ्ग वेद का अध्ययन करे। क्योंकि वेदरुपी विराटपुरुष अथवा परमेश्वर का ज्ञान अंगांगीभावन्याय से तभी सर्वोत्कृष्टरूप में संभव है यदि हम सांगरुप में वेदाध्ययन करते हैं ।

वेदांजलि, *An International Peer Reviewed Refereed Research Journal*
वर्ष–10, अंक–19, भाग–1, जनवरी–जून 2023 | ISSN: 2349-364X | *Impact Factor : 7.109*

जो आचार्य यह आक्षेप करते हैं कि वेद तो गौचारण के समय चरवाहों द्वारा गाये गये वृथा प्रलापआलाप मात्र है क्योंकि , चेतन देवता मानकर स ,वेदों में अक्षादि पदार्थों जो कि अचेतन हैं्तुतियाँ प्राप्त होती हैं वे एकदेशविकृत"मनन्यवद् भवति" सिद्धांत का अनुशीलन करें।

कुछ आचार्य बहुदेवतावाद का निषेध करते हैं यदि ऐसा माना जाये तो अभिव्यापकाधार का सर्वस्मिन् आत्मा " "अस्ति व्यर्थ हो जायेगा कार्यकारणभाव से विश्वरुप कार्य की सिद्धि हेतु ईश्वररुप कारण स्वीकार करना पड़ेगा। किंच जैसे अनारभिन्न सत्ता है उसी प्रकार प्रत्येक देवता की -आम्रादि व्यष्टि रुप में वृक्षविशेष हैं तथा सभी की भिन्न ,जामुन अमरूद, कि वेदों में उल्लिखित है किंतु यथा समष्टिरुप में सभी वृक्षादि की सामूहिक सत्ता वन अथवा अपनी निर्वचनीय सत्ता है जैसा उपवन शब्द से अभिरुप प्राप्त करती है उसी प्रकार वह पारमार्थिक ,विराट पुरुष ,ईश्वर (स्ट्रीम आफ कॉन्शसनेस) भगवान के रुप में सभी देवताओं का समष्टिरुप है उसी प्रकार यदि हम पुरुष शब्द के निर्वचन पर ध्यान देंगे तो ,परमात्मा पायेंगे कि पूर्यते सप्तभिः धातुभिः इति पुरः शरीराणि ।तस्मिन् शेते पुरिषादो पुरुषो वा । अतः हम सभी के इस नश्वर शरीर में अधितिष्ठित आत्मा विशेष पुरुषरुप सिद्ध होता है जो कि ऋग्वेद वर्णित विराट पुरुष का अंश मात्र है-:

एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।[15]

जिसको पश्चाद्वर्ती विचारको नें "एक नूँर ते सब जग उपजा कौन भले को मंदे" कहकर स्वीकार किया है आज पुनः आवश्यकता है वेदांगों सहित वेदाध्ययन की जिससे हम उस पारमार्थिक सत्ता का सान्निध्य प्राप्त कर सकें और अंत में परमपद को प्राप्त कर सकें। वेदाध्ययन अथवा उसके अंग मात्र के अनुशीलन से ही दीर्घदीर्घतर अट्टालिकाओं के निर्माण में व्यापृत मानवीय मनीषा का कालुष्य अपोहित हो जायेगा तथा उस मानव विशेष को जो वेदानुशीलन में तत्पर है ऋतंभरा प्रज्ञा की प्राप्ति होगी।

संदर्भ सूची:-

1. निरुक्तशास्त्र में निर्वचनप्रक्रिया।
2. वैदिक मिथालाजी ।
3. निरुक्त ।
4. ऋग्वेद 1/139/11
5. वहीं 1/164/20
6. निरुक्त 7/4
7. ऋग्वेद 1/164/46
8. वहीं 1/89/90
9. वहीं 10/121/90
10. वैदिक मिथालाजी।
11. निरुक्त ।
12. मैक्डानल Bid page 2
13. निरुक्त ।
14. महाभाष्य पस्पशाह्निकम् ।
15. ऋग्वेद 10/90/03

❖